International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

गांधी दर्शन में नैतिकता की प्रासंगिकता

रीता देवी सिंह[1] वी.ड़ी.पाराशर[2]

[1]आचार्य समाजशास्त्र राजकीय महाविद्यालयए धौलपुर

[2]सहायक आचार्य राजकीय महाविद्यालयए धौलपुर

Abstract:
वस्तुतः महात्मा गांधी ने किसी नवीन दर्शन की रचना नहीं की है वरन् उनके विचारों का जो दर्षनिक आधार है वही गांधी. दर्शन है। गांधीजी के सम्पूर्ण जीवन में हमें भले ही उसका स्वरूप राजनीतिकए आर्थिकए सामाजिकए शैक्षणिकए कैसा भी हो आध्यात्मिकता उसका मूल स्वर है। उनका सम्पूर्ण जीवन मानवता की अध्यात्मिक उन्नति में संलग्न रहा है। गांधीजी के चिन्तन में ईष्वर के प्रति अटूट आस्था एवं विष्वास था। उन्होंने ईष्वर को एक़ जीवन्त शक्ति मानते हुये कहा कि हमारा जीवन उसी शक्ति से संचालित है। स्वयं गांधी जी के शब्दों में.''ईष्वर वर्णन से परे की कोई ऐसी चीज है। जिसे हम अनुभव तो कर सकते है किन्तु जान नही सकते।'' सत्य को ईष्वर के रूप में परिभाषित करते हुये गांधीजी ने इसे व्यापकता प्रदान की एव सत्य में ईष्वर के अनेक लक्षणों जैसे सद़ाचार, नैतिकता, न्याय, अहिंसा एवं प्रेम आदि को समाविष्ट किया।

Keywords: गांधी, **दर्शन**, ईष्वर, अहिंसा

गांधीजी के नैतिक दर्षन का आधार प्रत्येक मानव में अषतः अनिवार्य ईष्वरत्त्व का होना है क्योकि सृष्टि के कण–कण में परमात्मा की चेतना व्याप्त है अतः कोई भी इंसान शत प्रतिषत बुरा नहीं हो सकता, आवष्यकता उसके ईष्वरत्त्व अर्थात् मानवीय आत्मा में विद्यमान उस श्रेष्ठ अंष को उभारने की है, इसलिये गांधीजी ने ईष्वर को मानवता से कभी अलग नहीं समझा। ईष्वर शब्द का अर्थ विस्तार कर उन्होंने उसे दरिद्रनारायण कहकर पुकार जिसका आषय है ' निधनों का ईष्वर'। नर सेवा नारायण सेवा के रूप में निष्चित रूप में गांधीजी ने ईष्वर का मानवीयकरण कर सम्पूर्ण मानवता को एक नवीन दृष्टि एवं नवीन दिषा प्रदान की। गांधीजी ने ईष्वर की साकार सत्ता को सत् मानते हुये कहा कि ईष्वर को जीवन में स्वीकार करना ही सच्चा धर्म है, धर्म व नैतिकता एकार्थक शब्द है एवं दोनों आपस में इस प्रकार गुंथे हुये है कि वे एक दूसरे से अपृथक्करणीय है। धर्म नैतिकता की पूर्व शर्त है नैतिकता धर्म में सहयोगी है। सभी धर्मो का एक समान नैतिक आधार है जिसे हम विष्वधर्म कह सकते है। महात्मा गांधी का कहना था कि धर्म की आराधना हेतु हमें किसी संकीर्ण गुफा या किसी उच्च पर्वत षिखर पर जाने की आवष्यकता नहीं है धर्म की अभिव्यक्ति तो समाज में हमारे कार्यो में प्रदर्षित होनी चाहिए।

गांधी दर्षन में नैतिकता के आधारभूत सिद्धान्त सत्य व अहिंसा है। गांधीजी ने निरपेक्ष सत्य को ईष्वर का पर्यायः माना। ईष्वर के प्रति उनकी अगाध आस्था का प्राकट्य उनकी आत्मकथा के एक दृष्टान्त से पूर्णतः स्पष्ट है–जब बम्बई में एक अमेरिकन बीमा एजेन्ट मुझसे मिलने आया उसने मेरे साथ मेरे भावी हित की बातें एसे ढंग से की मानों हम पुराने मित्र हो ''अमेरिका में तो आपकी स्थिति के सब लोग आपने जीवन का बीमा कराते है। आपको भी ऐसा करके भविष्य के विषय में निष्चिंत हो जाना चाहिए जीवन का भरोसा है ही नहीं अमेरिका में तो हम बीमा कराना अपना धर्म समझते है क्या ''मैं आपको एक छोटी सी पॉलिसी लेने के लिये ललचा नही सकता।''

दस हजार रूपये की बीमा पॉलिसी करवा लेने के पश्चात् उक्त पॉलिसी गांधीजी के लिये इसलिए दुख का कारण बन गयी कि बीमा कराने के पश्चात् उन्होने समझा की मैंने ईष्वर के प्रति अविष्वास पैदा किया। गांधीजी का सम्पूर्ण जीवन सत्यमय था वह सत्य के साथ समझौता नही करते थे वकालात पेषा को छोडने का कारण सत्य आचरण ही था वह झूठ व फरेब के साथ अपने मुवक्किल को मुकदमा जिताने में विष्वास नहीं रखते थे।

गांधीजी ने अहिंसा को व्यापक अर्थ प्रदान करते हुये उसे सत्य की प्राप्ति का प्रमुख साधन माना है मानव मात्र में ब्रह्म का अंष होने के कारण सभी मनुष्य एक आध्यत्मिक एकता के सूत्र में जुड़े हुये है अगर हम ईष्वर से प्रेम करते है तो मुनष्य से भी करते है गांधीजी ने अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज में बताया है–''अगर दुनिया की कथा लड़ाई से शुरू होती तो आज एक भी आदमी जिंदा नही होता लेकिन दुनिया में इतने लोग आज भी जिंदा है यह बताता है कि दुनिया का आधार भौतिक बल न होकर सत्य दया व आत्मबल है।''उक्त उद्धहरण में गांधीजी ने अहिंसा की महत्ता प्रदर्षित करते हुये मानव–विकास के इतिहास की पूर्वषर्त प्रेम व अहिंसा को माना। गांधीजी के लिये अहिंसा न केवल दर्षन है वरन् यह कार्यपद्धति व हृदय–परिवर्तन का साधन है। सत्य, स्वरूप साध्य को खोज का नैतिक होना आवष्यक है और इसकी पूर्ति हम अहिंसा रूपी साधन से ही कर सकते है अर्थात उनके लिये अहिंसा सर्वोच्च नैतिक व अध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक है। माहत्मा गांधी ने अपनी नैतिकता के प्रकाष से न केवल भारत को वरन् पूरी दुनिया को प्रकाषवान बनाया। गांधीजी ने हमें न केवल राष्ट्रीय स्वतंत्रता दिलायी वरन् एक ऐसा माहौल प्रदान किया जिसमें हम अपने गुणों का विकास कर मनुष्यत्व को पा सकें। वे हिंसा रक्तपात, असत्य, धोखेवाजी की कीमत पर आजादी नहीं चाहते क्योंकि वे जानते थे कि नैतिकता विहीन आजादी का कोई मूल्य नहीं है।

आज हम वैष्विक क्षितिज पर दृष्टिपात् करे तो देखते है कि दुनिया मे समस्याओं की भरमार है। राजनीतिक उपनिवेषवाद दुनिया से समाप्तप्राय हो गया है लेकिन उसका स्थान आर्थिक उपनिवेषवाद ने ले लिया है व विकसित राष्ट्र एवं उनकी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां नये–नये हथकण्डे ईजाद कर विकासषील राष्ट्रों का शोषण कर रहे है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और उनके साम्राज्य विस्तार को बढावा देने वाले विष्व बैंक, अन्तराष्ट्रीय मुद्राकोष, और विष्व व्यापार संगठन की नापाक तिकड़ी का षिंकजा उन कमजोर राष्ट्रों पर कसता जा रहा है जिनके पैर अभी लड़खडा रहे है असल में गांधीजी के विकास की आधार भूत शर्त यह थी हम आत्मबल से सराबोर होकर स्वालम्बी बनें स्वंय की जरूरतों को आन्तरिक संसाधनों के आधार पर पूर्ण करें। गांधी का जीवन दर्षन सीमित आवष्यकताओं को बयां करता है वह बाह्य चीजों का एकदम विरोध करते थे क्योंकि वह यह मानते थे कि बाह्य शक्तियों के एक सीमा से अधिक होने पर हम पराधीन हो जायेगें।

आज सम्पूर्ण विष्व पर्यावरणीय समस्याओं से जूझ रहा है गांधीय दृष्टि से इनका प्रमुख कारण संसाधनों का अंधाधुंध विदोहन व भौतिक विकास की अंधी दौड़ प्रतियोगिता में राष्ट्रो का शामिल होना है। गांधीय दृष्टि से हम देखे तो, वह कहते है कि प्रकृति हमें इतना देती है कि सम्पूर्ण जगत की आवष्यकताआं की पूर्ति हो सकती लेकिन एक भी व्यक्ति के लालच की पूर्ति नही हो सकती अर्थात् आधुनिक चकाचौंध की दुनिया से परे हटकर हमें विकास को पुनः परिभाषित करना होगा।

आज वर्तमान विष्व आतंकवाद व कट्टरतावाद की चपेट में है तमाम इस्लामिक व गैर– इस्लामिक राष्ट्रों में चरमतावादी तत्त्व सिर उठा रहे है' व सम्पूर्ण मानवता के लिये नासूर बन गये है एसे समय में गांधीजी हमारे जेहन में आ ही जाते है अगर उनके द्वारा सत्य व अहिंसा पर आधारित व्यवस्था आज कायम हो जाये तो पूरे विष्व में अमन चैन स्थापित हो सकता है।

आज हम अपनी राष्ट्रीय समस्याओं पर गौर करें तो अनेक राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, समस्यायें विद्यमान है। भारतीय राजनीति एवं राजनेता आज मूल्य एवं नैतिकताविहीन दिखाई देते है। राजनेता अपने कर्तव्यबोध को समझकर अगर राजनीति को जनसेवा का माध्यम मान लें तो हमारी–समस्यायें छू मंतर हो जायेगी। गांधीजी राजनीति का आध्यात्मीकरण चाहते थे वह कहते है ''धर्मविहीन राजनीति से संढाध आती है राजनीति से पृथक किया हुआ धर्म निरर्थक है राजनीति का अर्थ है जन कल्याण हेतु सक्रियता।''आज जनकल्याण के नाम पर राज्य के कार्यक्षेत्रों में वृद्वि से राज्य मजबूत होता जा रहा है और इसके सषक्त होने से अनके समस्यायें पैदा हो रही है राज्य अनैतिक आचरण कर रहा है। अगर गांधीवादी दृष्टिकोण से देखें तो वह राज्य को साधन मानते हुये उसके कार्यक्षेत्र को न्यूनतम करने के हिमायती थे क्योंकि व्यक्ति स्वालम्बी व आत्मनिर्भर होकर ही अपनी समस्याओं का समाधान कर सकता है। राज्य संगठित हिंसा का प्रतीक है अतः आवष्यक है कि राज्य के कार्यक्षेत्र को न्यूनतम कर उसे विकेन्द्रित कर दिया जाये। चरखा गांधीजी के विरेन्द्रीकरण का प्रतीक है।

आज मानवता नित नई स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से जूझ रही है गांधी रोटी के लिये शारीरिक श्रम के सिद्धान्त को चाहते है वह कहते कि महान प्रकृति की इच्छा है कि मनुष्य पसीना बहाकर खाना खाये। अगर प्रत्येक मनुष्य अपनी दिन चर्या में शारीरिक श्रम को अनिवार्य कर दे तो निष्चित रूप से अनेक स्वास्थ्य संबंधी समस्यों नेपथ्य में चली जायेंगी।

सम्पूर्ण विष्व की अर्थव्यवस्था उतार–चढाव व मंदी के दौर से गुजरती रहती है। विविध देषों के मध्य आर्थिक असमानता की एक दीवार खड़ी है। आज गरीवों की संख्या बढती जा रही है एवं अमीरों की सम्पत्ति बढती जा रही है गांधीजी के शब्दों में '' भारत का अमेरिका तथा यूरोप के देषों के समान भौतिकवादी दौड़ में नैतिकता का अन्त नही करना है वें पुरूषों स्त्रियों और बालकों की मृतदेहों पर खड़ी होने वाली दैत्याकार चिमनियों तथा फैक्ट्रियों को पसंद नही करते। उनके अनुसार देष की आर्थिक समृद्धि बढने के साथ–साथ नैतिकता का स्तर दिनोंदिन घटता जा रहा है। निष्चित रूप के औधोगीकरण एवं व्यापक स्तर पर मषीनीकरण के कारण आज दुनिया में बेरोजगारी बढी है गांधीजी इसके कट्टर विरोधी थे।
उक्त आधुनिक आर्थिक समस्याओं का हल गांधीजी के आर्थिक विचारों में ढूंढा जा सकता है। उनके अनुसार अर्थषास्त्र पर नीतिषास्त्र की प्रधानता होनी चाहिए। सत्य व अहिसा को आर्थिक क्षेत्र मे लागू करना चाहिये। गांधीजी के आर्थिक विचारों का आधार नैतिक व अध्यात्मिक है वह अर्थ को साधन मानते है। उनके अनुसार सच्चा अर्थ शास्त्र वही है जो नैतिकता के उच्च मानदण्ड़ों का स्वयं में समाविष्ट कर मानवता के दुखों का हरण करे। उनके ट्रस्टीषिप संबंधी विचार बेषक आदर्षवादी कहे जाते है लेकिन एक पल के लिये धनिक यह मान ले कि यह धन धरोहर स्वरूप है तो सम्पूर्ण दुनिया का एक पल में कायापल्प हो जाएगा। गांधीजी के शब्दों में '' संसार की सारी सम्पत्ति भगवान की है और यदि किसी के पास अनुपात से अधिक धन है तो वह उस धन का जनता की और से ट्रष्टी या अमानतदार है।''निश्चित रूप से गांधीजी के आर्थिक दर्षन की प्रांसगिकता आज स्वयं सिद्ध है गांधीजी कहते हें कि वह अर्थषास्त्र जो व्यक्ति अथवा राष्ट्र के नैतिक कल्याण पर आघात करता है अनैतिक है और इसलिये पापपूर्ण भी है। आगे उन्होंने कहा अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा दोष यह है कि धनी लोग निर्धनों का शोषण करके अपार धन कमा लेते है और मालिक तथा नौकर के संबंध दिन प्रतिदिन बिग़ड़ते जाते है।

आज मनवता के समक्ष तमाम सामाजिक समस्याओं खड़ी है अगर हम इन समस्याओं के समाधान का प्रयास शुरू करें तो हम निष्चित रूप से गांधीजी को सामने खड़ा पायेंगे उन्होंने अनेक तत्कालीन सामाजिक समस्याओं का चिन्तन कर उनके समाधान पर बल दिया जैसे अष्पृष्यता को गांधीजी ने हिन्दू समाज के लिए अभिषाप बताया उन्होंने कहा यह एक घुन है जो हिन्दू समाज को अन्दर ही अन्दर खाये जा रहा है। नारी दुर्दषा से गांधीजी अन्दर से बहुत दुखी थे उन्होंने अपने चिन्तन में स्पष्ट किया कि किसी भी क्षेत्र में महिलायें पुरूषों से कमतर नही है उन्होंने स्त्रियों को पुरूषों

के समान अधिकार व स्वतंत्रता दिये जाने वकालात की। पर्दा प्रथा पर चोट करते हुये उन्होंने कहा कि पर्दे से चरित्र की पवित्रता नही आ सकती यह तो अन्तःकरण से जुड़ा विषय है। स्वयं गांधीजी के शब्दों में ''पुरूष का जन्म स्त्री से होता है उसका मांस स्त्री के मांस से और हड्डी स्त्री की हड्डी से बनती है।'' बाल विवाह का अमान्य करते हुये उन्होंने तत्कालीन सामाजिक चिन्तकों से अनुरोध किया कि बेहिचक विधवा पुनर्विवाह को अनुमति मिलनी चाहिये।

गांधीजी का षिक्षा दर्षन आज बहुमूल्य है आज की षिक्षा पद्धति के समक्ष मुख्य समस्या यह है कि वह विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में आषानुरूप सफल नही हुयी है एक राष्ट्र के लिये यह जरूरी है कि उसके नागरिक नैतिकता के उच्च गुणों से युक्त हो भले ही तथ्यात्मक ज्ञान अपेक्षाकृत कम हो। गांधीजी के अनुसार षिक्षा एक व्यापक धारण है उसका आधार आध्यत्मिक है एवं षिक्षा का उद्ेष्य शरीर, मष्तिष्क और आत्मा को समन्वित करना है।

वर्तमान युग में मानवता हिंसा युद्ध व आण्विक हथियारों के साये में है ऐसे समय में गांधीजी की अहिंसा की नीति सभी के मनोमस्तिष्क में आ जाती है। गांधीजी ने हमें शांति का पाठ पढाया यह पूरा विष्व मानता है और उसकी महत्ता भी पहचानता है इसी कारण संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 2 अक्टूबर को उनके जन्मदिवस पर अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाया जाता है।

गांधी दर्शन के अध्ययन के उपरांत ऐसा प्रतोत होता है कि महात्मा का शरीर हाड़–मांस से निर्मित न होकर नैतिकता के अवयवों से निर्मित था। वह मानव जीवन के नैतिक प्रयोजन में विश्वास रखते थे। उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति की दो अन्तर्रात्मा नही हो सकती अर्थात् मानवीय क्रियाओं के वैयक्तिक एवं राजनीतिक दोनों क्षेत्रों में समान रूप से नैतिक संहिता का पालन करना चाहिये। चाहे कोई साध्य सामाजिक, राजनीतिक या अन्य किसी भी आधार पर कितना भी पवित्र क्यों न हो, उसकी सिद्धि में अपवित्र साधनों का सहारा नही ले सकते क्योंकि साधन व साध्य में अनिवार्य एकरूपता होती है।

गांधी के व्यक्तित्व, कृतित्व व सिद्वान्तों में नैतिकता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है सत्य, अहिंसा, साधन की पवित्रता, राजनीति का आध्यात्मीकरण, न्यासिता सिद्वान्त, न्यूनतम राज्य, इत्यादि सभी विचारों का प्रवाह नैतिकता की ओर है। गांधीजी के नैतिकता संबंधी विचारों में वर्तमान की अधिकांश समस्याओं का निदान खोजा जा सकता है चाहे वह समस्यायें, वैयक्तिक क्षेत्रीय, राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय किसी भी प्रकृति की क्यों न हो। आज आवश्यकता नैतिकता के गांधीय प्रतिमानों को हृदयगंम करने की है लेकिन आधुनिक राजनीतिक नेतृत्व 'मैकियावलीय राजनीति' का भक्त है।

निस्संदेह यह कहा जा सकता है कि गांधीजी ने राजनीति में धर्म व नैतिकता की वकालात कर राजनीति में सेवाभाव व मानवतावादी पक्ष का पोषण किया। आज राजनीति में भ्रष्टचार, अपराधीकरण, दल–बदल विधायकों की खरीद फरोख्त आदि अनेक ऐसे तत्त्व विद्यमान है जो राजनीतिक के नैतिक है पतन से जुड हैं, इसलिये गांधीय चिन्तन की प्रासंगिकता असंदिग्ध है। अतः कहा जा सकता है कि –''गांधी चिन्तन का हम कोई भी ऐसा क्षेत्र नही ढूंढ सकते जो नैतिकता से ओत–प्रोत न हो और न ही आज की ऐसी कोई समस्या ढूंढ सकते जिसके समाधान में गांधीय आत्मा दिखाई न दे।''

मुख्य शब्द– गांधी–दर्शन, ईश्वरत्त्व, आध्यात्मीकरण, न्यसिता, न्यूनतम राज्य, मैकियावलीय–राजनीति दरिद्रनारायण, उपनिवेशवाद, चरमतावाद, अश्पृश्यता,।

सन्दर्भ पुस्तकें

1. गांधी,मोहनदास कर्मचन्द : सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा अनुवादक–काषिनाथ–त्रिवेदी नवजीवन प्रकाषन मंदिर अहमदावाद 1961

2. गांधीजी : हिन्द स्वराज, अनुवादक–अमृतलाल ठाकोरदास नाणावटी सर्वसेवासंघ प्रकाषन राजघाट, वाराणसी 2009
3. कालेलकर :काका : गांधीवाद और समाजवाद, दिल्ली 1939
4. पोलक एम.जी : महात्मा गांधीः दी मेन, लन्दन 1931
5. प्यारेलाल : गांधियन टेक्नीक्स इन द मोड़र्न वर्ल्ड, अहमदावाद 1953
6. बिड़ला घनष्यवाय : बापू, दिल्ली, 1944
7. संथानम के : गांधीज्म एण्ड एनलिसिस, बम्बई 1960
8. वर्मा,एस.एल. : महात्मा गांधी एवं धर्मनिरपेक्षता, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 1999, जयपुर
9. अवस्थी, ए.एवं अवस्थी आर.के. : भारतीय राजनीतिक चिन्तन रिसर्च पब्लिकेषन जयपुर
10. नागर, पुरूषोतम : आधुनिक भारतीय सामाजिक और राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकाडमी हरिहर प्रिण्टर्स जयपुर।